हिंदी साहित्य विविध विमर्श

संपादक:
प्रा. रवीन्द्र ठाकरे
डॉ. रघुनाथ वाकले

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

हिंदी साहित्य विविध विमर्श

संपादक:
प्रा. रवीन्द्र ठाकरे
डॉ. रघुनाथ वाकले

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२३
ISBN 978-81-19584-05-5

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : १२००.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

14.	हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श और सामाजिक सरोकार	डॉ. गेलजी भाटिया	122
15.	वृद्ध विमर्श का यथार्थ :'वापसी '	गीतिका शाइकिया	135
16.	हिंदी की कविताओं में पर्यावरण	डॉ. लावणे विजय भास्कर	140
17.	पंकज सुबीर कृत "अकाल में उत्सव" उपन्यास में कृषक विमर्श	प्रा. ऐश्वर्या राजन वाघमारे	147
18.	हिंदी कहानियों में वृध्द-विमर्श	प्रा.डॉ.व्ही.डी.सूर्यवंशी	153
19.	डॉ. सेंगर के कथा साहित्य में पर्यावरण और पारिवारिक परिवेश	डॉ. परमाल सिंह कुशवाह	159
20.	किसान विमर्श : स्वरुप एवं संकल्पना	प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव	167
21.	बुजूर्ग पीढ़ी का आख्याकन : 'समय सरगम'	प्रा. डॉ. अशोक शामराव मराठे	176
22.	प्रेमचंद की कहानियों में वृद्ध विमर्श	डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे	184
23.	'पानी के प्राचीर' उपन्यास में कृषक-विमर्श	डॉ. बेबी कोलते	190
24.	हिंदी कहानी साहित्य में वृद्ध विमर्श	डॉ. बन्सीलाल गाड़ीलोहार	195
25.	हिंदी काव्य साहित्य में पर्यावरण विमर्श	डॉ. दत्तात्रय लक्ष्मण येडले	202
26.	"यह गाँव बिकाऊ है" उपन्यास में अभिव्यक्त किसान चेतना	मन्नू देवी	210
27.	हिंदी कहानियों में चित्रित वृद्ध विमर्श	निलेश एस. पाटील	218
28.	प्रेमचंद के कथात्मक साहित्य में किसान विमर्श	हंसा संजय बागरे प्रो. डॉ.जे.एस.मोरे	223
29.	हिंदी साहित्य में पर्यावरण-विमर्श	सुरेखा ज्ञानदेव आवटे	231

17

पंकज सुबीर कृत "अकाल में उत्सव" उपन्यास में कृषक विमर्श

प्रा. ऐश्वर्या राजन वाघमारे
अनेकांत एजुकेशन सोसायटी के
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

धरती और किसान का एक घनिष्ठ संबंध है। वह अपने जमीन से इस तरह प्रेम करता है इस तरह से उससे जुड़ता है जैसे एक मां अपने बच्चे के साथ। किसान के लिए अपनी खेती सब कुछ होती है वही उसकी मां होती है वही उसकी संतान भी होती है। खेती को वो कभी भी व्यवहार की दृष्टि से देखता ही नहीं बल्कि वह तो उसका जीवनदाता होता है। वह किसी भी हालत में खेती को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता है। भारत धान का देश है और भारत को ही अन्न का भंडार कहा जाता है। अन्न से ही तो मनुष्य का जीवन है।

परन्तु भारत में ही जो अन्नदाता है, अपना किसान, उसकी ही समस्या है। किसान की दयनीय स्थिति सबसे ज्यादा खराब भारत में ही है। इसी किसान की समस्या को हमारे समक्ष उजागर करनेवाले 'पंकज सुबीर' जी का उपन्यास "अकाल में उत्सव" है। इस उपन्यास में चित्रित रामप्रसाद के जीवन को केंद्र में रखकर ही इस आलेख को बुना जा रहा है।

'पंकज सुबीर' जी का "अकाल में उत्सव" उपन्यास किसानों के वर्तमान समस्याओं को इंगित करता हुआ उपन्यास है। मुख्य रूप से किसान आत्महत्या की दर्दनाक कहानी को बयां करता है। उक्त उपन्यास की कथा एक छोटा सा गांव नाम है सूखा पानी। पहाड़ों से घिरा हुआ गांव जहां पर जमीन बहुत उपजाऊ नहीं है। गांव के चारों तरफ जंगल है। सगौन के वृक्षों से घिरा हुआ यह जंगल है। मुख्य मार्ग से

चार किलोमीटर अंदर यह सूखा पानी गांव का निवास है। सुखा पानी गांव को लेखक ने अपने उपन्यास में जब दिखाया तो मन में जिज्ञासा जागृत होता है।

"अकाल में उत्सव" उपन्यास में लेखक ग्रामीण परिवेश और शहरी जीवन की पृष्ठभूमि को एक साथ समक्ष रखते हुए आगे बढ़ता है।अर्थात एक ही समय में दो कहानियों को दर्शाया गया है। एक तरफ सुखा पानी गांव का एक आम इंसान किसान 'रामप्रसाद' इस उपन्यास का मुख्य पात्र है। जिसकी आंखों में आने वाली फसल की उम्मीदें है। और दूसरी तरफ नगर उत्सव की जोरों शोरों से तैय्यरी करते हुए सरकारी अमले का मुखिया श्री 'राम परिहार' आई. ए. एस. नाम का एक पात्र है जो शहर का कलेक्टर है। जिसके इर्द-गिर्द कुछ अधिकारी, समाजसेवी, नेता, पत्रकार जैसे लोग हैं जो इसी दौरान शहर में नगर उत्सव के आयोजन की तैय्यारी कर रहे है। इस आयोजन के समय उपन्यास में मुहावरे और कहावतें का प्रयोग प्रसंगानुसार बहुत ही दिलचस्प तरीके से लिया गया है। इसी गांव का किसान रामप्रसाद जो की बहुत ही सीधा साधा एवं गरीबी से लढ़ता हुआ, कर्ज में डूबा हुआ अपनी सिर्फ दो एकड़ जमीन के सहारे, घर की जिम्मेदारियों से लढ़ता हुआ दिखाई देता है। जिसकी जिंदगी की यह कहानी है। उसकी जिंदगी संघर्षों से घिरी है। किसान दुर्दशा का इतना हृदयविदारक और मर्मस्पर्शी वर्णन इस उपन्यास में किया गया है की उसके पास में दो एकड़ जमीन होने के बाद भी वह पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूर्ण नहीं कर पाता तो वह दूसरों के यहां मजदूरी कर पूर्ण करने का निर्वाह प्रयत्न करता है परंतु एक-एक करके उसकी जिंदगी में समस्याओं का आगमन होता रहता हैं।

बिजली का बिल देने के लिए उसके पास एक फूटी कौड़ी नहीं होती है तो उसकी पत्नी कमला ने उसके पैरों के तोड़ी बेचने के लिए कहती है। "उसने एक पैर की तोड़ी को सीधा किया और उसमें लगी चांदी की ढिबरी को अंगूठे और तर्जनी से धीरे-धीरे खोलने लगी। कमला सिर झुकाए दूसरे पैर की तोड़ी को खोल रही थी। पेंच फंस गया था, इसीलिए खुलने में कुछ दिक्कत कर रहा था। रामप्रसाद उसी प्रकार बैठा रहा, उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी तोड़ी के उस पेंच को खोलने की। उसे पता था अगर पेंच खुल गई तो तोड़ी को बेचना ही पड़ेगा| परिस्थिति की मजबूरीवश जेवर के नाम से उसके पास बस ये आखरी जेवर बचा था | "उसे लग

रहा था कि उसने अगर पेंच को खोलने की कोशिश की, तो वह अभी भकभका के रो पड़ेगा"| "किसान की पत्नी वैसे तो बात बात में रो पढ़ती है लेकिन अगर उसका पति रो रहा हो तो उसके आंसू सूख जाते हैं जब्त कर लेती है वह अपने अंदर के सारे दर्द को।" लेखक छोटे छोटे वाक्यों से पूरा दृश्य खड़ा कर देते है। " कमला की तोड़ी बिक गई। जो बिकनी ही थी। छोटी जोत किसान की पत्नी के शरीर पर के जेवर क्रमशः घटने के लिए ही होते हैं। और हर घटाव का एक भौतिक अंत शून्य से होता है, घटाव की प्रक्रिया शून्य होने तक जारी रहती है।"

इस अथाह दुख में पति पत्नी का प्रसंग भी बहुत ही हृदयस्पर्शी लगा। परम्परागत जेवरों के साथ जुडी भावनाओ को लेखक ने बहुत ही संवेदना के साथ पेश किया है| समस्याओं को इस तरह बयां किया है कि किसान उस समस्याओं से बाहर निकलता ही नहीं। आम जिंदगी जीने की बजाए वह समस्याओं से घिरा रहता है। साथ ही अपनी बहन के ससुराल में वह मदद करके अपना कर्तव्य का पालन भी करते हुए दिखाई देता है। इस उपन्यास में रामप्रसाद बैंक द्वारा लिया गया कर्जे के फर्जीवाड़े का शिकार होता है।

"जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा था कि अगर देश को विकास की तरफ बढ़ते देखना है तो गरीबों को और किसानों को ही सैक्रिफाइस करना पड़ेगा। आजादी को आज पचहत्तर साल होने को है लेकिन सैक्रिफाइस किसान ही कर रहे हैं। बाकी किसी को भी सैक्रिफाइस नहीं करना पड़ा। सब की तनख्वाह बढ़ीं, सब चीजों के भाव बढ़े लेकिन, उस हिसाब से किसान को जो न्यूनतम समर्थन मूल्य मिलता है उसमें बढ़ोतरी नहीं हुई। नेहरू ने कहा था कि यदि देश की तरक्की देखनी है तो किसान सैक्रिफाइस करें लेकिन यह नहीं बताया कि कब तक करें?"

रामप्रसाद की जिन्दगी में दुख मानो दहलीज पर एक के बाद एक परेशानियां लेकर खड़ी होती है। ओलावृष्टि से उसकी पूरी फसल नष्ट हो जाती है इसी के साथ उसका जीवन भी बर्बाद हो जाता है । बेमौसम बारिश के वजह से 'रामप्रसाद' का जीवन ही उद्वस्त हो जाता है। पटवारी द्वारा और तहसीलदार द्वारा रिपोर्ट बनाने के लिए रिश्वत की मांग सुनकर रामप्रसाद को सदमा लगता है। इसी

सदमे के वजह से वह आत्महत्या करता है। और अंत में भ्रष्ट शासन प्रणाली के चलते रामप्रसाद को पागल सिद्ध किया जाता है यह कहकर की "रामप्रसाद के नाम से बैंक में फर्जी किसान क्रेडिट कार्ड बनवा लिया था किसी ने, इसके कारण मानसिक संतुलन खराब हो गया था उसका। इसी कारण आत्महत्या की रामप्रसाद ने"।

"नगर उत्सव के कवि सम्मेलन में सुप्रसिद्ध कवि ने अपनी प्रसिद्ध पंक्तियां पढ़ी- धरती की बेचैनी को बस बादल समझता है। गलत कहा कवि ने धरती की बेचैनी को बादल नहीं समझता कभी नही समझता धरती की बेचैनी को बस किसान समझता है"।

रामप्रसाद किस तरह से परस्थिति से लड़ता है और लड़ते-लड़ते आखिर में थक जाता है। हमारे समाज में किस तरह से भ्रष्टाचार फैला हुआ है। किसान लड़ता है पर भ्रष्टाचार इतनी गहराई से फैला हुआ रहता है कि वह खुद ही उसके जाल में फंसता जाता है और खुद का अंत कर देता है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने किसान आत्महत्या का दुखद चित्रण हमारे समक्ष रखा है।

यहां पर सरकार द्वारा किए गए कार्य किस तरह बस कागजों पर ही सिमट कर रह जाते हैं उसकी वास्तविकता का जीवंत उदाहरण उपन्यासकार ने अपने उपन्यास द्वारा चित्रित किया है। गांव के पटवारी, ग्रामसेवक किस तरह से भ्रष्टाचार करके गांव के किसानों को तकलीफे देते हैं और गांव के किसान यह समझ नहीं पाते और वह आत्महत्या कर लेते है। वर्तमान समय में किसान आत्महत्या एक ज्वलंत प्रश्न बनकर हमारे इर्द गिर्द मंडरा रहा है। किसान आत्महत्या पर अनेक रचनाकारों ने अपनी रचना के माध्यम से किसान विमर्श को उजागर किया है। कृषक विमर्श आज के समय में चर्चा का विषय है और इस विषय को हर विधा में लिखकर समाज को जाग्रत करना जरूरीसा बन गया है। "अकाल में उत्सव" जैसे उपन्यास किसान आत्महत्या को चित्रित करके हमारी शासन प्रणाली पर कठोर अघात करते है। लेखक यहां पर कुछ हद तक सरकार को भी दोषी मानता है और लेखक का यह दृष्टिकोण मेरे विचारों के अनुसार सटीक होता है। किस तरह भ्रष्टाचार के कारणों से उसकी फसल नष्ट हो जाती है उसका उसे मुआवजा तो नहीं मिलता बल्कि उसको अपनी जान गंवानी पड़ती है। मेरे विचारों के अनुसार यह उपन्यास

अभागा किसान का सजीव चित्रण के साथ दयनीय स्थिति का लेखा-जोखा है। इसका इतना बड़ा दुष्परिणाम है कि किसान आत्महत्या कर लेता है। एक तरफ मुख्यमंत्री के आदेशानुसार नगर उत्सव की तैयारी हो रही है तो दूसरी तरफ ओलावृष्टि से किसानों की फसल नष्ट होने का दृश्य दिखाई देता है। प्रशासनिक अधिकारियों को उत्सव की चिंता किसान की फसलों से ज्यादा होती है। सच तो यह है कि यह उपन्यास किसान के शोषण का पर्दाफाश करने वाला उपन्यास है।

"किसान की समस्या को हम और गहराइयों में देखे तो आज देश का कुल खेती का योगदान 14 प्रतिशत होने के बावजूद 60 प्रतिशत गरीब लोगों को ही रोजगार उपलब्ध होता है। बल्कि आज तक भारत देश के खेती और किसान को जो महत्व मिलना चाहिए था वह नहीं मिला। भारत का निर्माण इस तरह से है कि जब तक खेती संकट से बाहर नहीं आता है तब तक किसान सुखी नहीं हो सकता है। भारत के 60 प्रतिशत खेती यह बारिश पर अवलंबित है। सिर्फ 40 प्रतिशत ही खेती के लिए साधन उपलब्ध है। काफी दिनों तक फसल को मुनासिब भाव मिलना चाहिए। इसीलिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की शुरुआत की गई है। इसके पहले यह प्रणाली सिर्फ गेहूं और धान के लिए ही निर्धारित की गई थी परंतु अब यह प्रणाली 1986 में 22 जिलों के लिए लागू कर दिया गया है। कुछ राज्यों को छोड़कर कहीं पर भी MSP के आधार पर फसल खरीदने के लिए व्यवस्था नहीं है। इस हेतु सालभर किसान जीतोड़ मेहनत करता है, परिश्रम करता है, उसके बावजूद भी उसे योग्य मुआवजा नहीं मिलता है। बल्कि मध्यस्थियों को काफी नफा मिलता है। इसमें काफी त्रुटियां है इसको कम करना बेहद जरूरी है।"

हमारे देश में किसान आत्महत्या एक समस्या है। सबसे ज्यादा किसान आत्महत्या महाराष्ट्र में ही होता है। हमारे समाज में आज भी किसान समस्या मुख्य मुद्दा है। किसान आंदोलन होते है, उसमें कितने किसान मर भी जाते है, लेकिन वह आंदोलन चलता रहता है, पर फिर भी किसान झुकते नहीं लेकिन उनकी समस्याओं को कभी किसी ने नहीं समझा अगर हम भूतकाल में जाएंगे तब भी किसान की दुर्दशा वही की वही थी, अगर हम वर्तमान की बात करें तो तब भी किसान दुर्दशा वैसे ही विद्यमान है। हम कितने भी नियम कानून बना दें लेकिन देश का अन्नदाता किसान जो जीवनभर संघर्षों से लड़ते-लड़ते अंत में खुद का अंत कर लेता है परंतु सरकार की नीतियों से एवं अपने समस्याओं से उभर कर बाहार नहीं

आ पाता है। वर्तमान समय में किसान विमर्श को ओर अधिक जागृत करनी की जरूरत है ताकि समाज में जनजगृती फैले और मेरा युवा वर्ग बदलते समाज में बदलता किसान जीवन की ओर प्रेरित हो और एक स्वच्छ एवं सुलभ देश का निर्माण हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1) अकाल में उत्सव- पंकज सुबीर
2) भारतीय किसान दशा और दिशा - नीलमणि शर्मा